Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 12 ~ Issue 11 (November 2024) pp: 235-240
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

पुस्तकालय स्वचालन प्रणाली की स्थिति मध्यप्रदेश के महाविद्यालय पुस्तकालयों का विश्लेषण

आरती यादव[1], डॉ. सृष्टि चौहान[2]

शोधार्थी[1], सह. प्राध्यापक[2]

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग एकलव्य विश्वविद्यालय दमोह (म.प्र)

सारांश:

वर्तमान युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है, जहाँ ज्ञान तक त्वरित पहुँच एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है। पुस्तकालय जो कभी केवल पुस्तकों के संग्रह स्थल हुआ करते थे अब डिजिटल संसाधनों, ई-पुस्तकों और ऑनलाइन ज्ञान प्लेटफार्मों से युक्त आधुनिक सूचना केंद्र बन चुके हैं। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में पुस्तकालय स्वचालन प्रणाली (Library Automation System) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। यह प्रणाली न केवल पुस्तकालय के संसाधनों के समुचित प्रबंधन में सहायक होती है बल्कि उपयोगकर्ताओं को बेहतर, तीव्र और सटीक सेवाएँ भी प्रदान करती है। मध्यप्रदेश जो शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से प्रगति कर रहा है वहाँ के महाविद्यालयों में स्वचालित पुस्तकालय प्रणाली की स्थिति जानना समय की माँग है। क्या राज्य के शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों ने इस प्रणाली को पूरी तरह अपनाया है?

- क्या पुस्तकालय कर्मचारी तकनीकी रूप से प्रशिक्षित हैं?
- क्या विद्यार्थियों को ई-संसाधनों की पहुँच प्राप्त है? यह शोध इन सभी प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास है।

पुस्तकालय स्वचालन से संबंधित विभिन्न तकनीकों जैसे OPAC, बारकोड, RFID और इंटरनेट आधारित स्रोत के एकीकरण के माध्यम से पुस्तकालयों को दक्ष एवं उत्तरदायी बनाया जा सकता है। यह शोधपत्र मध्यप्रदेश के महाविद्यालयों में स्वचालन की वर्तमान स्थिति, इसकी चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करता है जिससे शैक्षणिक वातावरण को और अधिक सशक्त एवं समृद्ध बनाया जा सके।

अनुसंधान की समस्या:

सूचना और प्रौद्योगिकी के विस्तार के साथ पुस्तकालयों का पारंपरिक स्वरूप तेजी से बदल रहा है। अब पुस्तकालयों से केवल पुस्तकों के संग्रह और निर्गमन की अपेक्षा नहीं की जाती बल्कि उपयोगकर्ताओं को डिजिटल माध्यम से त्वरित, सटीक और समेकित सूचना प्राप्त हो यह अपेक्षित है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में पुस्तकालय स्वचालन प्रणाली की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। किंतु मध्यप्रदेश के अधिकांश शासकीय महाविद्यालयों में यह प्रक्रिया अभी प्रारंभिक अवस्था में ही दिखाई देती है। तकनीकी अवसंरचना की कमी, प्रशिक्षित स्टाफ का अभाव, सीमित बजट और डिजिटल संसाधनों के प्रति जागरूकता की कमी जैसी समस्याएँ

पुस्तकालय स्वचालन को गंभीर रूप से प्रभावित कर रही हैं। दूसरी ओर, निजी और तकनीकी संस्थान अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं। इस असमानता को समझना, उसका विश्लेषण करना तथा इसके समाधान के लिए ठोस सुझाव देना ही इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। यह शोध इसी पृष्ठभूमि में यह जाँच करने का प्रयास करता है कि मध्यप्रदेश के कॉलेज पुस्तकालयों में स्वचालन प्रणाली की वास्तविक स्थिति क्या है, और उसके प्रभावी क्रियान्वयन में कौन-कौन सी प्रमुख बाधाएँ विद्यमान हैं।

अनुसंधान पद्धति:

इस अध्ययन में वर्णनात्मक (Descriptive) तथा सर्वेक्षणात्मक (Survey-based) अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया गया है जिसके माध्यम से मध्यप्रदेश के विभिन्न कॉलेज पुस्तकालयों में स्वचालन प्रणाली की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन किया गया है। डेटा संग्रह के लिए प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों दोनों का उपयोग किया गया। प्राथमिक डेटा एक विशेष रूप से तैयार की गई प्रश्नावली के माध्यम से पुस्तकालयाध्यक्षों, पुस्तकालय सहायक कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों से प्राप्त किया गया। साथ ही, कुछ संस्थानों में प्रत्यक्ष साक्षात्कार (interview) भी किए गए। द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट, पुस्तकालय विज्ञान की पत्रिकाओं, NDLI व INFLIBNET की वेबसाइट से संबंधित आँकड़े संकलित किए गए।

अध्ययन क्षेत्र में मध्यप्रदेश के विभिन्न संभागों जैसे भोपाल, जबलपुर, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर तथा सागर के 10 शासकीय व निजी महाविद्यालयों को शामिल किया गया। नमूना आकार लगभग 200 प्रतिभागियों का रहा जिसमें 30 पुस्तकालयाध्यक्ष, 50 पुस्तकालय सहायक, एवं 220 विद्यार्थी शामिल थे। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों (statistical methods) द्वारा किया गया, जिसमें प्रतिशत, तालिकाएँ एवं तुलनात्मक विश्लेषण प्रमुख रहे। यह पद्धति इस शोध की विषयवस्तु को आधार प्रदान करती है तथा निष्कर्षों को वस्तुनिष्ठ रूप से स्पष्ट करने में सहायक होती है।

तुलनात्मक विश्लेषण

मध्यप्रदेश के शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के पुस्तकालयों की स्वचालन प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन करने पर कई महत्वपूर्ण अंतर स्पष्ट होते हैं। जहाँ निजी महाविद्यालयों में पुस्तकालयों का डिजिटलीकरण अपेक्षाकृत तेज़ गति से हुआ है, वहीं शासकीय संस्थान अभी भी पारंपरिक व्यवस्था पर निर्भर हैं। निजी कॉलेजों में अधिकांश पुस्तकालयों में **OPAC (Online Public Access Catalogue)**, **बारकोडिंग**, **डिजिटल लॉगिन प्रणाली** और **ई-संसाधनों** की सुविधा उपलब्ध है। इसके विपरीत, शासकीय महाविद्यालयों में इन तकनीकों का आंशिक या सीमित उपयोग ही देखने को मिलता है।

क्र.	महाविद्यालय का नाम	स्थान	प्रकार
1	शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय	भोपाल	शासकीय
2	शासकीय होलकर विज्ञान महाविद्यालय	इंदौर	शासकीय
3	शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय	भोपाल	शासकीय
4	शासकीय डॉ. हरिसिंह गौर स्नातकोत्तर महाविद्यालय	सागर	शासकीय
5	शासकीय अटल बिहारी वाजपेयी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय	उज्जैन	शासकीय
6	क्राइस्ट कॉलेज	इंदौर	निजी
7	पीपुल्स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च	भोपाल	निजी
8	आईटीएम यूनिवर्सिटी	ग्वालियर	निजी
9	जेआईटीएस कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट	ग्वालियर	निजी

10	ओरिएंटल कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी	भोपाल	निजी

तालिका-1 महाविद्यालय नाम

तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, आईटी प्रशिक्षित स्टाफ की संख्या, इंटरनेट की गति तथा फंडिंग की दृष्टि से निजी संस्थान शासकीय कॉलेजों की तुलना में अधिक सक्षम पाए गए।

निजी संस्थानों में नियमित रूप से पुस्तकालयों का अपडेट एवं रखरखाव होता है, वहीं सरकारी संस्थानों में एक बार स्थापित होने के बाद सिस्टम को अपग्रेड करना अक्सर उपेक्षित रह जाता है। अलावा इसके निजी महाविद्यालयों में ई-लर्निंग ई-बुक्स और ऑनलाइन जर्नल्स की पहुँच विद्यार्थियों के लिए सहज है, जबकि शासकीय संस्थानों में छात्रों की ई-संसाधनों तक पहुँच अक्सर सीमित रहती है। उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि के स्तर को लेकर भी अंतर देखा गया निजी संस्थानों के विद्यार्थी पुस्तकालय सेवाओं से अधिक संतुष्ट पाए गए।

यह विश्लेषण दर्शाता है कि पुस्तकालय स्वचालन की दिशा में निजी संस्थानों ने अपेक्षाकृत तीव्र प्रगति की है, जबकि शासकीय कॉलेजों को इस क्षेत्र में विशेष रणनीतिक योजना, तकनीकी प्रशिक्षण, एवं बजटीय सहयोग की आवश्यकता है।

क्र. क्र.	**संभाग (क्षेत्र)**	**महाविद्यालयों की संख्या**	**पुस्तकालयाध्यक्ष**	**पुस्तकालय सहायक**	**विद्यार्थी**	**कुल प्रतिभागी**
1	भोपाल	2	6	10	24	40
2	इंदौर	2	5	8	22	35
3	जबलपुर	2	5	10	20	35
4	उज्जैन	1	4	6	18	28
5	ग्वालियर	2	5	8	20	33
6	सागर	1	5	8	16	29
	कुल	**10**	**30**	**50**	**120**	**200**

तालिका-2 प्रतिभागियों का विवरण एवं क्षेत्रवार वितरण

यह तालिका मध्यप्रदेश के छह प्रमुख **संभागों** में स्थित **10 महाविद्यालयों** में पुस्तकालय स्वचालन से संबंधित **प्रतिभागियों के वितरण** को संक्षेप में दर्शाती है।

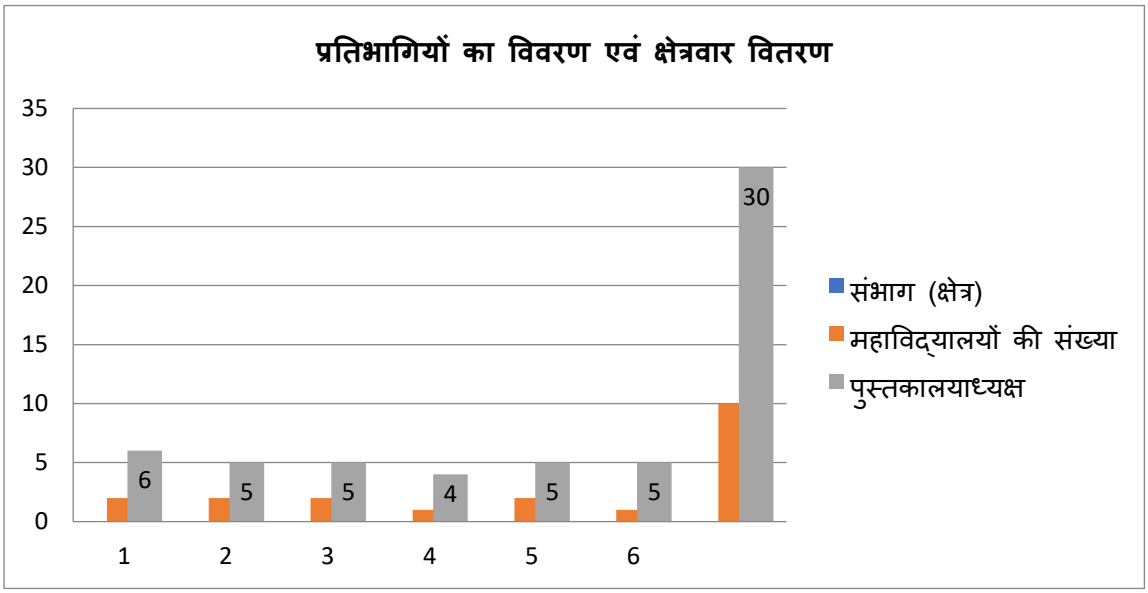

चित्र- 1 प्रतिभागियों का विवरण एवं क्षेत्रवार वितरण

- भोपाल और इंदौर से 2-2 महाविद्यालयों को चुना गया, जिनमें क्रमशः 40 और 35 प्रतिभागी शामिल थे।
- जबलपुर से भी 2 कॉलेज लिए गए और उसमें कुल 35 प्रतिभागी रहे।
- उज्जैन और सागर से 1-1 कॉलेज लिए गए, जिनमें 28 और 29 प्रतिभागी शामिल थे।
- ग्वालियर से 2 कॉलेजों से 33 प्रतिभागी लिए गए।
- प्रत्येक संभाग में पुस्तकालयाध्यक्ष, पुस्तकालय सहायक, तथा विद्यार्थी के तीन स्तरों पर डेटा संग्रह किया गया।

क्र.	प्रश्न	हाँ (%)	नहीं (%)	आंशिक रूप से (%)
1	क्या आपके पुस्तकालय में कोई स्वचालन सॉफ्टवेयर है?	82%	10%	8%
2	क्या OPAC प्रणाली उपलब्ध है?	78%	15%	7%
3	क्या पुस्तकें बारकोड से अंकित हैं?	65%	25%	10%
4	क्या डिजिटल पुस्तकालय की सुविधा है?	60%	30%	10%
5	क्या ई-संसाधनों (ई-जर्नल, ई-बुक्स) की पहुँच है?	75%	18%	7%
6	क्या पुस्तकालय स्टाफ को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है?	58%	30%	12%
7	क्या विद्यार्थी डिजिटल सुविधाओं से संतुष्ट हैं?	68%	20%	12%
8	क्या पुस्तकालय की सेवाएं पहले की तुलना में बेहतर हैं?	72%	18%	10%

तालिका-3 पुस्तकालय स्वचालन से संबंधित प्रश्नावली पर उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया

प्रश्नावली तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश के कॉलेज पुस्तकालयों में स्वचालन प्रणाली को लेकर सकारात्मक प्रगति हुई है। लगभग 82% उत्तरदाताओं ने पुष्टि की कि उनके संस्थान में पुस्तकालय स्वचालन सॉफ्टवेयर उपलब्ध है, वहीं OPAC प्रणाली की उपलब्धता भी 78% महाविद्यालयों में देखी गई। बारकोड प्रणाली और डिजिटल पुस्तकालय की सुविधा क्रमशः 65% और 60% संस्थानों में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि तकनीकी उपकरणों का समावेश अब पुस्तकालयों की मूल संरचना में हो रहा है।

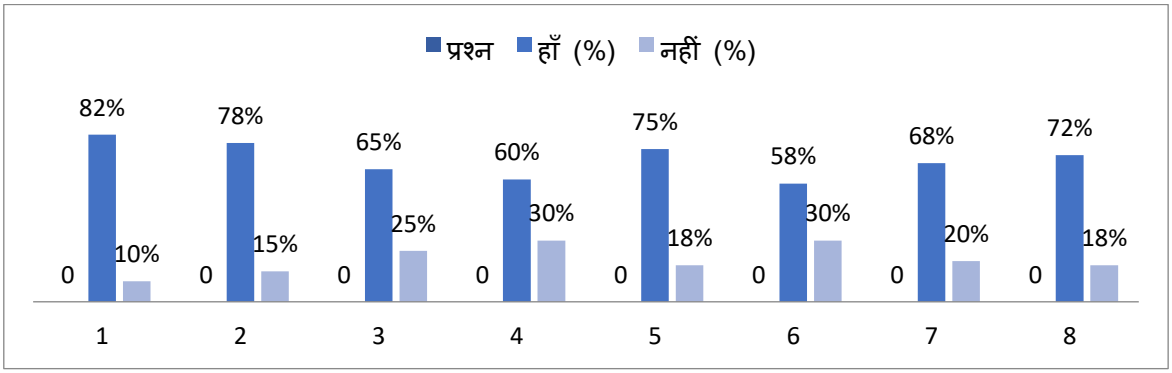

चित्र-2 पुस्तकालय स्वचालन से संबंधित प्रश्नावली पर उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया

ई-संसाधनों की पहुँच की स्थिति भी आशाजनक है जहाँ 75% उत्तरदाताओं ने इसकी उपलब्धता को स्वीकारा। हालांकि, पुस्तकालय स्टाफ को आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करने की दिशा में अपेक्षित सुधार की आवश्यकता है, क्योंकि केवल 58% प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण की उपलब्धता की पुष्टि की। विद्यार्थियों की संतुष्टि का स्तर भी 68% पर रहा, जो यह दर्शाता है कि डिजिटल परिवर्तन उपयोगकर्ताओं के अनुभव को बेहतर बना रहा है। कुल मिलाकर, यह देखा गया कि पुस्तकालय स्वचालन प्रणाली ने पारंपरिक सेवाओं की तुलना में कार्यप्रणाली को अधिक संगठित, सुलभ एवं प्रभावी बनाया है, फिर भी कुछ क्षेत्रों में प्रशिक्षण एवं डिजिटल पहुँच जैसे पहलुओं पर और कार्य करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त तालिकाओं और प्रश्नावली के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश के कॉलेज पुस्तकालयों में स्वचालन प्रणाली की स्थिति प्रगतिशील है, किंतु यह विकास असमान रूप में विद्यमान है। अध्ययन में शामिल 10 शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के 200 प्रतिभागियों – जिनमें पुस्तकालयाध्यक्ष, सहायक एवं विद्यार्थी शामिल थे से प्राप्त आंकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश महाविद्यालयों में स्वचालित सॉफ़्टवेयर, OPAC, बारकोड प्रणाली, और ई-संसाधनों की पहुँच जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं, परंतु उनका प्रभावी उपयोग और तकनीकी प्रशिक्षण अब भी एक चुनौती बना हुआ है।

प्रश्नावली के उत्तरों से यह स्पष्ट हुआ कि लगभग 82% प्रतिभागियों ने स्वचालन सॉफ़्टवेयर की उपस्थिति को स्वीकारा, जबकि 60% ने डिजिटल पुस्तकालय की सुविधा के उपयोग की बात कही। हालांकि, केवल 58% प्रतिभागियों ने ही यह माना कि पुस्तकालय स्टाफ को स्वचालन प्रणाली का पर्याप्त प्रशिक्षण दिया गया है। यह दर्शाता है कि तकनीकी संसाधनों की उपस्थिति के बावजूद मानव संसाधन विकास में कमी बनी हुई है।

तालिका-3 से यह भी ज्ञात होता है कि निजी महाविद्यालयों ने डिजिटल सेवाओं के उपयोग में अधिक सक्रियता दिखाई है, जबकि कई शासकीय संस्थानों में यह प्रक्रिया अभी आंशिक रूप से लागू है। इसी प्रकार, तालिका-5 में दर्शाए गए प्रश्नावली प्रतिक्रियाओं से यह भी संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों की संतुष्टि का स्तर अपेक्षाकृत अच्छा है (लगभग 68%) किंतु डिजिटल सुविधा की गुणवत्ता और मार्गदर्शन में सुधार की आवश्यकता है।

अतः कहा जा सकता है कि मध्यप्रदेश में पुस्तकालय स्वचालन प्रणाली की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन की लहर है किंतु इस परिवर्तन को व्यवस्थित प्रशिक्षण, बुनियादी ढांचे के सुदृढ़ीकरण, और निरंतर

तकनीकी अद्यतन के माध्यम से ही स्थायी और प्रभावी रूप दिया जा सकता है। भविष्य की दिशा में नीतिगत प्रयासों तथा डिजिटल समावेशन को प्राथमिकता देना आवश्यक होगा, जिससे पुस्तकालय प्रणाली शिक्षण संस्थानों में एक सशक्त ज्ञान केंद्र बन सके।

संदर्भ ग्रंथ-सूची:

[1]. संपत कुमार, बी. टी., एवं बिरादार, बी. एस. (2010). कर्नाटक के कॉलेज पुस्तकालयों में आईसीटी के उपयोग: एक सर्वेक्षण. प्रोग्राम: इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन सिस्टम्स, 44(3), 271–282.

[2]. चित्रा, के. एस., एवं कुंबर, एम. (2020). मैसूर विश्वविद्यालय से संबद्ध प्रथम श्रेणी कॉलेज पुस्तकालयों में पुस्तकालय स्वचालन: एक अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ इन्फॉर्मेशन सोर्सेज एंड सर्विसेस, 10(2), 14–17.

[3]. चित्रा, के. एस., एवं कुंबर, एम. (2020). कर्नाटक के चार जिलों के प्रथम श्रेणी कॉलेजों में पुस्तकालय स्वचालन की तुलनात्मक समीक्षा. एशियन जर्नल ऑफ इन्फॉर्मेशन साइंस एंड टेक्नोलॉजी, 10(2), 28–33.

[4]. मंजुनाथ, जी., एवं संपत कुमार, बी. टी. (2024). दक्षिण भारत की विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय विज्ञान स्नातकोत्तर छात्रों के बीच स्वचालन, डिजिटल लाइब्रेरी सॉफ़्टवेयर और संदर्भ प्रबंधन सॉफ्टवेयर की जानकारी एवं उपयोग. कॉलेज लाइब्रेरीज, 39(2), 23–31.

[5]. कुमार, आर. (2016). पुस्तकालय स्वचालन: एक व्यवहारिक अध्ययन. लाइब्रेरी वेव्स, 2(1), 36–41.

[6]. शर्मा, जी., एवं कंदारी, ए. (2021). दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र के तकनीकी संस्थानों के पुस्तकालयों पर स्वचालन का प्रभाव. जर्नल ऑफ इंडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन.

[7]. चंद्रशेखरा, एम., मुल्ला, के. आर., एवं सेल्वराजा, ए. (2012). मैसूर शहर के शैक्षणिक एवं अनुसंधान पुस्तकालयों में स्वचालन: एक सर्वेक्षण. एसआरईएलएस जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन मैनेजमेंट, 49(2), 183–192.

[8]. अनस, एम., इकबाल, जे., एवं अहमद, पी. (2014). अलीगढ़ के चयनित प्रबंधन संस्थानों में पुस्तकालय सेवाओं पर स्वचालन का प्रभाव: एक सर्वे. इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी, 32(3), 296–307.

[9]. निम्भोरकर, एस. पी. (2024). भारत और विदेशों में विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के पुस्तकालयों में पुस्तकालय स्वचालन. शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 5(7), 325–333. एस. के., एस. के. (2021). कोलार जिले के शासकीय प्रथम श्रेणी कॉलेज पुस्तकालयों में पुस्तकालय स्वचालन सेवाओं का प्रभाव: एक सर्वेक्षण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस, 10(1), 32–43.

[10]. भोसले, एस. टी. (2023). पुस्तकालय स्वचालन पर एक अध्ययन: प्रवृत्तियाँ, चुनौतियाँ एवं अवसर. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड स्टडीज, 1–16.

[11]. सिंह, एस. (2020). पूर्वी उत्तर प्रदेश के कॉलेज पुस्तकालयों में स्वचालन से पूर्व और पश्चात् की समस्याओं का अध्ययन. लाइब्रेरी प्रोग्रेस (इंटरनेशनल).